IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हवा–पानी, जीवन आधार

कोरोना बना सुधार

डॉ. सुरेन्द्र कुमार पूनिया,
विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय, झज्जर (हरियाणा)।

पर्यावरण हमारी पृथ्वी पर जीवन का आधार है। मानव सभ्यता के विकास में पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पर्यावरण का मतलब है कि ऐसा वातावरण जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड व जीव–जगत जिससे घिरा हुआ है। डॉ. विधानिवास मिश्र का कथन है *''औद्योगिक विकास से अंधे मानव ने प्रकृति को चुनौति माना और उस पर विजय प्राप्त करने की इच्छा करने लगा''* यहीं से मानव व प्रकृति का संघर्ष आरम्भ हुआ है। पर्यावरण विदों का कहना है कि मानव खुद अपने कर्मों से अपना विनाश कर रहा है। *मैकाइवर व पेज* ने लिखा है कि मनुष्य एक पर्यावरण में जन्म लेता है, उसी में बढ़ता व प्रौढ़ होता है। उसका शरीर तथा जीवन की रचना आदि सब कुछ पर्यावरण की उत्पत्ति है।

आज मानव के अनैतिक आचरण से जहां पर्यावरण सहित लगभग सभी क्षेत्रों में पतन हुआ है, वहीं अच्छे आचरण व सामाजिक स्वीकृति से किए जाने वाले व्यावहारिक क्रियाकलापों से आशातीत उत्थान की आशा भी बनी है। प्रकृति ने मनुष्य को सोचने, विचारने व कार्य करने की योग्यता व क्षमता दी है। वह प्रकृति को अपने हिसाब से परिवर्तित कर सकता है। मनुष्य सृष्टि का सर्वाधिक बुद्धिमान व चिंतनशील प्राणी है। प्रकृति प्रदत्त विभिन्न आयामों में संतुलन बनाए रखने से पर्यावरण शुद्ध बना रह सकता है। जो उसके विकास एवं प्रगति में सहायक सिद्ध हो सकता है। मानव प्रकृति प्रदत संतुलन के साथ छेड़छाड़ कर उसे बिगाड़ने का दुःसाहस करता है तो अन्य घटकों को परोक्ष व अपरोक्ष रूप से हानि होती है। संभवतः प्राकृतिक शक्तियों की प्रबलता के कारण ही प्राचीन विचारकों ने सूर्य, अग्नि, वायु, जल व वनस्पति आदि को देवता मानकर लोगों को उनकी पूजा करने के लिए प्रेरित किया था।

कोरोना विश्वमारी (महामारी) :–

कोरोना वायरस (कोविड –19) चीन के वुहान शहर से निकलकर दुनिया में तेजी से फैल रहा है। वुहान शहर में 2019 में दिसंबर मध्य में बहुत से लोगों को बिना कारण निमोनिया होने लगा, जिसमें अधिकतर लोग फूड मार्केट में मछली विक्रेता थे। 20 जनवरी 2020 को चीनी प्रीमियर ली केकियांग ने नावेल कोरोनावायरस के कारण फैलने वाली निमोनिया महामारी को रोकने के लिए निर्णायक और प्रभावी प्रयास करने का आग्रह किया। मार्च 2020 तक थाईलैंड, दक्षिण कोरिया, जापान, ताइवान, मकाउ, हांगकांग, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, सिंगापुर, वियतनाम, भारत, इराक, ईरान, इटली, कतर, दुबई, कुवैत और अन्य 183 देशों में कोरोना केस की पुष्टि के मामले चिंताजनक स्थिति में है।

कोरोना और पर्यावरण

प्रकृति में हर एक चीज का अंत है, सूर्य का भी। अमर कुछ भी नहीं है। फिर भी संस्कृति सिर्फ अमरत्व को जन्म देती है। मानवीय पागलपन ऐसी नश्वरता और प्रकृति का विरोध कर अमर होने की धुन पर नाचता रहता है। इससे समाज, विचारधारा और नाते–रिश्ते नष्ट हो जाते हैं। दुनिया के सबसे अमीर और सबसे अच्छे आहार विशेषज्ञों, परीक्षकों व डॉक्टरों के इलाज के बावजूद भी गरीब देशों का इस दुनिया से कूच करना तय है। जिस प्रकृति ने हमें पैदा किया उसी ने **कोरोनावायरस** भी पैदा किया है। कोरोनावायरस को अब समझने के लिए बहुत जरूरी है कि प्रकृति से खिलवाड़, किस तरह भयंकर त्रासदी के रूप में हमारे सामने आ सकता है। कोरोना त्रासदी उस रेखा की तरफ ही इशारा कर रही है कि यह आखिरी सीमा है.....। हम इसके परे नहीं जा सकते। विकास की भी एक सीमा होनी चाहिए। हमें यह तय करना होगा कि एक सीमा से परे आकर हम प्रकृति को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। अपने उपयोग को सीमित करेंगे। आवश्यकता के अनुसार सीमा में रहकर ही संसाधनों का प्रयोग करेंगे। सीमित सुविधाओं में रहेंगे, प्रकृति से मितव्ययी व्यवहार करेंगे। मनुष्य और पर्यावरण का संबंध आदि काल से गत्यात्मक (Dynamic) रहा है। यह अंतर्संबंध समय और स्थान के अनुरूप बदलता रहा है। कहीं मनुष्य प्राकृतिक शक्तियों से भयभीत होकर प्रकृति का दास बना हुआ है और कहीं मनुष्य प्रकृति पर अपनी विजय का परचम लहरा रहा है।

भूगोल की निश्चयवादी जर्मन विचारधारा के अनुसार भी मानव *'प्रकृति का दास'* है। पर्यावरण (प्रकृति) सर्वशक्तिमान है। प्राकृतिक शक्तियों के आगे मानव निष्क्रिय, तुच्छ और महत्वहीन है। इस विचारधारा को अनेकों भूगोलवताओं ने अपने–अपने विचारों में सम्मिलित किया है, जिनमें प्रमुखतया हेरोडोटस, स्ट्रेब्रो, अलबतानी, इब्न हॉकल, बोदिन, काण्ट, हम्बोल्ट आदि का नाम प्रमुख है। हम्बोल्ट के अनुसार ''सारी पृथ्वी पर उत्तर से दक्षिण ध्रुव तक समस्त प्रकृति में केवल एक आत्मा व्याप्त है। पत्थरों, पौधों, मनुष्यों तथा मानवों में भी केवल एक ही जीव ओत–प्रोत है।

चार्ल्स डार्विन की पुस्तक ''प्रकृति चयन द्वारा जातियों की उत्पत्ति– (Origin of Species by Natural Selection)" में भी उन्होंने माना कि जीवों की उत्पत्ति उनका आकार व संख्या पर्यावरण द्वारा ही निर्धारित होते हैं। इसी विचारधारा के और भूगोलवताओं– हैकल, बकल, रैटजेल, कुमारी सैंपल ने भी पुरजोर समर्थन किया है। इन सब महान भूगोलवताओं का मत है कि *''यद्यपि मनुष्य और प्रकृति एक दूसरे को प्रभावित और परिवर्तित करते हैं फिर भी प्रकृति यह तय करती है कि मनुष्य कब और कैसे सक्रिय हो''*। अन्य शब्दों में कह सकते हैं कि *''प्रकृति सर्वशक्तिमान है और उसकी अनदेखी करने पर वह सदा पलटकर बदला लेती है।''* कोरोनावायरस (कोविड–19) शायद इसी पलट कर बदला लेने का अप्रत्यक्ष परिणाम है जो इस समय पूरी दुनिया में एक विराट मानवीय संकट के रूप में देखा जा रहा है। अनेकों विचारों में एक अति महत्वपूर्ण विचार कोरोनावायरस वैश्विक परिदृश्य का भी एक विचार है। जो विचारने पर जनमानस को मजबूर कर रहा है कि कोरोनावायरस डिजीज परिस्थितिकी संकट का प्रतीक है जो जैविक युद्ध या कहें कि जैविक आतंकवाद की परिधि तक ले जा रहा है। डॉक्टर विद्यानिवास मिश्र का कथन है कि *प्रकृति की संवेदनशीलता मानव को प्रभावित करती है किंतु जहां औद्योगिक विकास से अंधे मानव ने प्रकृति की चुनौतियां और उस पर विजय प्राप्त करने की इच्छा की तो यहीं से मानव प्रकृति का आपसी संघर्ष आरंभ हुआ है।*

वर्तमान सामायिक आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए कहने में अतिशयोक्ति नहीं कि कोविड–19 को एक व्यापक परिस्थितिकी संकट के लक्षण के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि इससे मानव अस्तित्व के लिए एक बड़ा खतरा पैदा हो गया है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अधिकांश सभ्यताओं का विनाश पारिस्थितिकी संकट से ही हुआ है। दरअसल जैवविविधता की कीमत पर प्रजातियों के मानकीकरण पर आधारित कृषि और पशुपालन का जिस तरह से औद्योगिकीकरण किया गया है उससे वन्य प्राणियों के प्राकृतिक परिवेश में हस्तक्षेप हुआ है और वह

जाने–अनजाने में मानव अपने दायरे के अंदर ले आया। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन वन्य प्राणियों में मौजूद विभिन्न प्रकार के वायरसों से लड़ने के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता हम मनुष्यों के पास नहीं।

कोरोनावायरस संकट की वजह से दुनिया भर में लॉकडाउन का असर पर्यावरण पर भी पड़ा है। भारत ही नहीं दुनियाभर में अनेकों पर्यावरण प्रदूषण करने वाली औद्योगिक इकाइयाँ हैं। पिछले कई दिनों से बंद पड़ी है।

कोरोना काल में वायु सुधार का मानव स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव :–

लॉकडाउन काल में वायु प्रदूषण में एकाएक कमी आने से वायु स्वच्छ नजर आने लगी। अनेकों प्रकार की औद्योगिक इकाइयां बंद होने से पर्यावरण में नाइट्रोजन ऑक्साइड का प्रदूषण औसतन 40 प्रतिशत घटा। इससे पिछले 30 दिनों में पार्टिकुलेट मैटर (PM) प्रदूषण के औसत स्तर में 10 प्रतिशत की कमी आई। यही वजह है कि पूरी दुनिया में हवा साफ हो गई, जिसकी वजह से यूरोप में एक महीने में करीब 11 हजार लोगों को प्रदूषण के कारण असमय मौत से बचाया जा सका। सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर की रिपोर्ट के मुताबिक सबसे ज्यादा असर बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ा। इस दौरान यूरोप में अस्थमा के करीब 600 मामले कम आए। इसके अतिरिक्त प्रीमेच्योर जन्म के मामलों में भी 600 से ज्यादा की गिरावट रही। करीब 1900 बच्चों को इमरजेंसी इलाज से बचाया जा सका। रिपोर्ट में यहां तक कहा गया है कि लॉकडाउन के दौरान बिजली व कोयले के 37 प्रतिशत प्लांट बंद रहे, जबकि एक तिहाई ऑयल प्लांट बंद रहे, जिसके कारण नाइट्रोजन ऑक्साइड का उत्सर्जन भी कम हुआ जो खासतौर पर अस्थमा के मरीजों के लिए ज्यादा नुकसानदायक है। साफ हवा मिलने से सांस व अस्थमा के मरीजों को जीवन दान प्राप्त हुआ है। स्वच्छ हवा मिलने से जर्मनी, ब्रिटेन, इटली, फ्रांस, स्पेन, स्वीडन, नॉर्वे, पुर्तगाल आदि 10 देशों में औसतन 1000 लोगों की मौतों में गिरावट आई है।

भारत में कोरोना काल में हमने लॉकडाउन के दौरान महसूस किया कि हमारी अबोहवा साफ हुई है। अब यह अवलोकन का वक्त है। किसी भी चीज में अतिवाद नहीं चलता फिर चाहे बात पर्यावरण की हो या विकास की। ग्लोबल अलायंस ऑफ हैल्थ एंड पोलूशन के अनुसार पर्यावरण प्रदूषण के चलते भारत में हर साल 20 लाख लोगों की असमय मौत हो जाती है। इस संकट काल के दौरान सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीनर के अध्ययन अनुसार भारत में प्रमुख शहरों की हवा में घातक PM 2.5 की मात्रा में 22 प्रतिशत की गिरावट आई। हालांकि इस दौरान पूरी दुनिया लॉकडाउन में रही है फिर भी कार्बन उत्सर्जन उतना नहीं घटा, जितना हमें दिख रहा है। लॉकडाउन में सिर्फ 5 प्रतिशत ही कार्बन उत्सर्जन घटा, क्योंकि प्रमुख पर्यावरण प्रदूषण प्लांट और रिफाइनरी चालू रही और इनसे ही 60 प्रतिशत पर्यावरण प्रदूषण होता है। जिसके फलस्वरुप तापमान वृद्धि में रुकावट नहीं हो पाई है। यदि हमें तापमान वृद्धि को रोकना है तो कार्बन उत्सर्जन के सालाना 7.6 फीसदी कमी करना लाजमी होगा (रिपोर्ट नेशनल ऑसैनिक एंड एटमॉस्फेयर एडमिनिस्ट्रेशन – अमेरिका)

दुनिया के लगभग 183 देश इस समय कोरोनावायरस से ग्रस्त हैं लेकिन वैज्ञानिकों ने इसका सकारात्मक पहलू खोज निकाला है। वायु प्रदूषण कम होने के कारण चीन में नाइट्रोजन ऑक्साइड का स्तर काफी कम हुआ है। इस कारण प्रदूषण कम होने से चीन में 100 दिनों में वायु स्वच्छ होने पर 70 हजार जानें बची हैं। यूरोप और एशिया में भी वायु स्वच्छ हो गई और हवा वास्तव में सांस लेने लायक हो गई। चीन में औद्योगिक इकाइयां बंद होने के कारण कच्चे तेल और कोयले की खपत 36 प्रतिशत घटी जिससे प्रदूषण 25 प्रतिशत कम हुआ। इन दिनों में लॉकडाउन के कारण चीन में 50 से 75 हजार लोग समय से पहले मौत (प्रदूषण के कारण) से बच गए हैं।

अमेरिका में लॉकडाउन के कारण कार्बनडाइऑक्साइड उत्सर्जन 10 प्रतिशत कम हुआ है। अमेरिका में कई शहरों में औद्योगिक गतिविधियां कम हुई हैं। *कोलंबिया यूनिवर्सिटी की एक रिसर्च के अनुसार* अकेले न्यूयॉर्क शहर

में यातायात 25 प्रतिशत घटा है। कार्बन मोनोऑक्साइड 50 प्रतिशत और कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन 10 प्रतिशत घटा है। एशिया, उत्तर अमेरिका और यूरोप को शामिल कर ले तो दुनिया का 88 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन यहीं से हो रहा है। यही वजह है कि मनुष्य कभी स्वाइन फ्लू, कभी बर्ड फ्लू, कभी एवियन फ्लू, और कभी करोना जैसी महामारियों का शिकार हो रहा है।

अत्यधिक प्रदूषित शहर भी पिछले कई दिनों के लॉक डाउन के कारण साफ नजर आने लगे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार जनता कर्फ्यू (21 मार्च) से पहले 54 शहरों की जलवायु अच्छी और संतोषजनक थी, लेकिन 29 मार्च को देश के (एक सप्ताह के अन्दर) ही 91 शहरों में वायु प्रदूषण न्यूनतम हो गया। अत्यधिक प्रदूषित शहर भी 09 से शून्य के मानक पर आ गए। तीन–चार महीने पहले ही उत्तर भारत के जो शहर दमघोटू हवा में जकड़े थे, वे लॉक डाउन के दौरान शुद्ध हवा में सांस लेते नजर आएं।

लॉक डाउन का पर्यावरण शुद्धता पर एक और आश्चर्यजनक प्रभाव देखने को मिला कि पेड़–पौधों के पतों में गजब की चमचमाती हरी भरी हरियाली देखने को मिली जो पर्यावरण को विशुद्ध करती नजर आई। इस दौरान शहरों व गावों में बीमार पड़ने वाले मरीजों की संख्या में काफी गिरावट देखने का मिली, जो आगामी दिनों के लिए एक अच्छा शुभ संकेत है। अप्रत्यक्ष रूप से लोगों में खुशी का स्तर भी बढ़ते देखा जा सकता है। काफी लोगों का मानना है कि साल में कम से कम 20 दिनों का लॉकडाउन नितांत आवश्यक है। जिससे प्रदूषण स्तर घटेगा, बीमारियां कम होगी। इसका सीधा लाभ हमारे स्वास्थ्य पर पड़ेगा। अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक बोझ घटेगा व सरकार को हजारों करोड़ रूपये की बचत होगी।

कुछ पर्यावरणीय समस्याएं मानव जनित नहीं है, अपितु उनका स्त्रोत प्राकृतिक बल है। अगस्त 1999 में जे.सी. पंथ की अध्यक्षता में गठित समिति में लगभग 30 आपदाओं का निर्धारण किया। जिसमें पांच भागों में बांटा जा सकता है :

जल / जलवायु	जैविक	रासायनिक, औद्योगिक और आण्विक	भूवैज्ञानिक	दुर्घटनाएं
बाढ़ चक्रवात ओलावृष्टि बादल फटना भू/उष्ण वेग शीत लहर हिमपात सूखा समुद्री अपरदन आसमानी बिजली	महामारी, विनाशकारी कीटों का आक्रमण, पशु महामारी, खाद्य विशाक्ता	रासायनिक और औद्योगिक आपदाएं, आण्विक आपदाएं	भूकम्प विशाल अग्निकांड सुरंग फटना भूस्खलन पंकप्रवाह	गली आग भाहरी आग हवाई–रेल–सड़क दुर्घटनाएं बड़े भवन गिरना

विश्व स्तर पर लॉकडाउन का प्रभाव

सदियों से मनुष्य अपने जीवन को बेहतर बनाने की कोशिशों में जुटा हुआ है। इस धुन में उसने प्रकृति को बेतहाशा उजाड़ा है और बड़े दम्भ से उसे विकास का जामा पहना दिया। किन्तु प्रकृति को सन्तुलन निर्माण करना बेहतर तरीके से आता है। लॉकडाउन होने के बाद कुछ ही समय में प्रकृति ने बड़ी तेजी से स्वयं का उपचार किया और दुनिया भर से पर्यावरण को लेकर कई तरह की सकारात्मक खबरें सामने आई। अब जरूरत है कि जो सकारात्मक बदलाव हुए हैं, वे कायम रहें और हम अपनी आदतों में बदलाव लाएं। इटली का मिलान शहर यूरोप का सबसे प्रदूषित

शहर हुआ करता था परन्तु लॉकडाउन में कारें कम निकलने से हवा में कोहरे और धुए का मिश्रण छट गया गया है और वातावरण साफ हो गया है।

दुनिया की एक तिहाई आबादी लॉकडाउन में जाने से 96 प्रतिशत वैश्विक गंतव्यों में यात्राओं पर प्रतिबंध हो गया। जिससे दुनिया के सबसे व्यस्त शहर भी विभिन्न प्रतिबंधों के चलते प्रदूषण मुक्त हो गए।

वायु सुधार के आंकडों की नजर में भारत के महानगरों के एकत्रित आंकड़ों से भी सकारात्मकता दिखने लगी। लॉकडाउन के दौरान प्रकृति के लिए बहुत अच्छा संकेत है। इसके चलते देश के सभी महानगरों में वायु, जल तथा ध्वनि प्रदूषण में भारी कमी आई है। शौद्यकर्त्ता 'सफर' के शोध के मुताबिक वर्ष 2012 और 2019 की तुलना में पुणे में नाइट्रोजन ऑक्साइड पीएस 2.5 के प्रदूषण में 45 प्रतिशत, अहमदाबाद में 50 प्रतिशत और मुंबई में 45 प्रतिशत की कमी देखने का मिली है। दिल्ली के वायु प्रदूषण में भी हालांकि समयानुसार व तिथि वार उतार–चढ़ाव रहा है लेकिन फिर भी दिल्ली की हवा में नाइट्रोजन ऑक्साइड के प्रदूषण में 20 प्रतिशत की कमी देखने को मिली है। दिल्ली में अलग–अलग क्षेत्रों में देखें तो यह कमी दिल्ली विश्वविद्यालय क्षेत्र में 46 प्रतिशत, नोएडा क्षेत्र में 50 प्रतिशत तथा मथुरा रोड पर 46 प्रतिशत दर्ज की गई है।

भारत

कोरोना से सुरक्षा के मद्देनजर ज्यादातर भारतीय लोग भी घरों में कैद हो गए और उद्योगों पर ताला लग गया है। इसका सकारात्मक असर पर्यावरण पर साफ तौर पर दिखाई पड़ने लगा है। नासा ने 100 साल के प्रदूषण का आंकलन किया, जिसमें इसका प्रभाव स्पष्ट नजर आया। नासा के सेटेलाइट सेंसर से पता चला है कि इन दिनों उत्तर भारत में वायु प्रदूषण 20 साल में सर्वाधिक निचले स्तर पर था। नासा ने इसके लिए वायुमंडल में मौजूद एरोसॉल[1] की जानकारी देते हुए बताया कि 2016 से 2019 के बीच खींची गई तस्वीरों की तुलना में वर्तमान में तस्वीरें अधिक स्पष्ट नजर आने लगी हैं क्योंकि वातावरण में एरोसॉल ऑप्टिकल डेपथ की मात्रा काफी कम हो गई है। एयरोसोल सीधे तौर पर मानव के फेफड़ों को नुकसान पहुंचाता है। नासा में यूनिवर्सिटी स्पेस रिसर्च एसोसिएशन के वैज्ञानिक पवन गुप्ता के मुताबिक लॉकडाउन के कारण वायुमंडल में बड़े पैमाने पर बदलाव देखने को मिला है।

कोरोना काल में लॉकडाउन का पंजाब की हवा में खास प्रभाव नजर आया। यह सब प्रदूषण की कमी के ही परिणाम है। जालंधर के लोगों को अपने घरों की छतों से हिमालय की वादियां नजर आने लगी। बादलों और प्रदूषण के हटने से यह सब संभव हुआ है। यहां के लोगों का कहना है कि दशकों पहले ऐसा ही होता था। *ये वादियों से लगभग 213 किलोमीटर की दूरी पर हैं।* आईएएस अधिकारी सुशांत नन्दा ने अपनी पोस्ट में लिखा कि हिमाचल की धौलाधार पर्वत श्रृंख्ला 30 साल बाद पंजाब के जालंधर से दिखने लगी है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि प्रकृति पहले क्या थी..... और हमने इसे क्या कर दिया है।

हरियाणा

लॉकडाउन के करीब 45 दिनों में हरियाणा पर्यावरण की दृष्टि से बहुत बेहतर स्थिति में था। दूर–दूर तक साफ दिखाई देने वाली तस्वीर इसका प्रमाण है। प्रदूषण का स्तर पिछले साल के मुकाबले आधा पहुंच गया। पंचकूला, रोहतक, मेवात, गुड़गांव आदि शहरों के एयर क्वालिटी इंडेक्स 100 से नीचे और अधिकांश जिलों में यह मॉडरेट हो

[1] एरोसॉल हवा में मौजूद ठोस व तरल से बने सूक्ष्म कण होते हैं जो दृश्यता को कम करते हैं। जिससे विजिबिलिटी घटती है। ये मानव फेफड़ों और ह्रदय को सीधे तौर पर नुकसान पहुंचा सकते हैं।

गया। लगभग आधे हरियाणा प्रदेश में वायु का प्रदूषण स्तर 100 से नीचे पहुंच गया। पर्यावरण विभाग के वैज्ञानिकों के अनुसार इस तरह का पर्यावरण व आबोहवा 1970–80 के दशक में होता था। लॉकडाउन के दौरान हरियाणा का नारनौल शहर सबसे शुद्ध 23 माइक्रोग्राम पर रहा।

कोरोना लॉकडाउन, नदी व जल सुधार

लॉक डाउन के कारण भारत में हालांकि पर्यटन उद्योग को करारी चोट लगी है लेकिन दूसरी तरफ आर्थिक दृष्टि के बजाय पर्यावरण की सकारात्मक सोच को देखें तो यह कोरोना काल का लॉक डाउन *'जल–जगत'* के लिए लाभकारी साबित हुआ है। अक्सर गर्मियां शुरू होते ही छुट्टियां होने के कारण विशेषकर हिमाचल प्रदेश या अन्य पर्यटन स्थलों की तरफ लोग अपना रुख कर लेते थे और होटल, रेस्तरां आदि में पानी का हाहाकार मच जाता था लेकिन लॉक डाउन के कारण पर्यटन और औद्योगिक इकाइयां बंद होने के कारण पानी की डिमांड भी घटी है। औद्योगिक इकाइयां बंद होने के कारण वहां के हिस्से का पानी आवासीय कालोनियों में सप्लाई हो पा रहा है, जिसके कारण गर्मी में पानी की किल्लत के कारण लोगों के द्वारा किए जाने वाले प्रदर्शन व सड़क रोको आंदोलन आदि में भी गिरावट आने से सामाजिक झगड़े नहीं हो रहे हैं और दूसरी तरफ प्रशासन भी इससे सुकून महसूस कर रहा है।

कार धुलाई रोक, कमर्शियल प्रयोग, जल पाईप लाइन से पानी चोरी पर रोक आदि से भी पानी बच रहा है और भू–जल संचयन हो रहा है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में ट्यूबवेल संचरित होने के कारण जलस्तर बढ़ने लगा है और ठप्प पड़े ट्यूबवैल पुनः संचालित हो गए हैं।

गंगा

हाल ही में उत्तराखंड पर्यावरण संरक्षण व प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने देवप्रयाग से हरिद्वार तक जल की गुणवत्ता के नमूनों की जांच में पाया कि 'हर की पौड़ी' में गंगा पानी की गुणवत्ता 'ए' श्रेणी की है। इस दौरान देहरादून प्रयोगशाला जांच में पाया कि फीकल कालीफार्म (मल–मूल की मात्रा) की मात्रा में भी काफी कमी आई है। इससे कहा जा सकता है कि मानव गतिविधियां घटने से प्रकृति को खुद को परिश्कृत करने का मौका मिल गया और यह हमारे लिए एक सबक के तौर पर काम कर सकता है। गंगा के डिसॉलवड सॉलिड की मात्रा में 500 प्रतिशत की कमी आई है जो तीर्थ स्थलों में बन्द के कारण ही संभव हो सका है।

पृथ्वी सम्मेलन के 28 साल बाद भी पर्यावरण प्रदूषण के हालात जस के तस ही थे लेकिन कोरोना महामारी से भयाकांत समूचे विश्व में लोगों ने पर्यावरण को स्वस्थ होने का अवकाश दे दिया है। भारत में जिस गंगा को पिछले 45 सालों से साफ करने का अभियान चल रहा था और पिछले 5 साल में करीब 20 हजार करोड रुपए खर्च करने पर भी मामूली सफलता दिख रही थी उस गंगा को 3 सप्ताह के लॉक डाउन ने निर्मल बना दिया है।

दुनिया में पानी साफ करने के चार पैमाने हैं जिनमें से गंगा नदी 3 पैमानों पर खरी उतर रही हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार दशकों बाद हर की पौड़ी में क्लोरीनेशन के बाद पानी पीने योग्य हो गया है।

लॉक डाउन के चलते सभी गतिविधियों पर लगी रोक से यमुना नदी को भी राहत की सांस मिली है। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति की ताजा रिपोर्ट के अनुसार यमुना का पानी पिछले साल की तुलना में काफी हद तक साफ हुआ है। एक परीक्षण के अनुसार दिल्ली से गुजरने वाली यमुना के 9 में से 4 स्थानों के नमूने लेने पर पानी में बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड में 18 से 33 प्रति ात की कमी आई है। यमुना के पानी की गुणवत्ता में सुधार के लिए औद्योगिक गतिविधियों पर लगी रोक के कारण कचरे की निकासी नहीं हो पाना इसकी गुणवत्ता सुधार में खास कारण

है। इससे साफ जाहिर होता है कि औद्योगिक कचरे के साथ साथ घरेलू कचरे पर भी रोक लगाना जरूरी होगा तभी यमुना या अन्य सभी नदियां स्वच्छ हो सकती हैं।

नदियों की खुद को साफ करने की क्षमता बढ़ी

पर्यावरणविद और साउथ एशिया नेटवर्क असोसिएट कोर्डिनेटर भीम सिंह रावत के अनुसार 'आर्गेनिक प्रदूषण' नदी के पानी में घुलकर खत्म हो जाता है लेकिन औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला कचरा नदी को स्वयं साफ करने की क्षमता को खो देता है। उद्योग–धंधे बन्द होने के ही कारण नदियां अपने आप को स्वयं भी साफ करने लगी है।

एक माह पहले तक अनेक हिस्सों में मैली दिखने वाली नर्मदा नदी का पानी इन दिनों मिनरल वाटर जैसा दिखाई दे रहा है। नर्मदा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ओंकारेश्वर मध्य प्रदेश के प्रबंधक एस.के. व्यास के अनुसार नर्मदा जल का मानक मिनरल वाटर जैसा हो गया है। विभाग द्वारा इसकी जांच भी की गई। नर्मदा के जल में कई तरह की औषधीय व जड़ी बूटी भी सम्माहित होती हैं। इसे पीने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इस नगरी के विद्वान व वरिष्ठ आचार्य सुभाष महाराज का कहना है कि ओकांरेश्वर में 25 साल पहले नर्मदा का जल ऐसा ही शुद्ध था। नर्मदा नदी के जल का टीडीएस पहले 126 मिलीग्राम प्रति लीटर था जो अब घटकर 100 से भी काफी कम हो गया है। नर्मदा जल प्रवाह हल्का हरा दिखाई देने लगा है जिसका मतलब है कि पानी की गंदगी 10 एनटीयू[2] से भी कम है। नर्मदा जल में पारदर्शिता भी बहुत बढ़ गई है। वर्तमान समय में 10 फीट की गहराई तक साफ पानी दिखाई दे रहा है।

गंगोत्री से निकलकर समुद्र तक गंगा 2025 किलोमीटर का सफर तय करती है। अनेक नदियां गंगा में मिलती हैं। इलाहाबाद में गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम हो जाता है। गंगा नदी किनारे बसे शहर हरिद्वार, मेरठ, कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी व कोलकाता के घाटों पर लॉकडाउन के दौरान अलग ही नजारे देखने को मिले।

हरिद्वार में आमतौर पर गंगा सप्तमी पर 50 हजार श्रद्धालु पहुंचते हैं लेकिन लॉकडाउन के दौरान सप्तमी पर महज 50 पुरोहित ही दिखाई दिए। सभी होटल धर्मशाला खाली थे, इसलिए शिविर का पानी गंगा में नहीं जा रहा जिस कारण पिछले 20 साल के इतिहास में गंगा जल स्वच्छ नजर आने लगा। मेरठ, सहारनपुर, हापुड़, मुजफ्फरनगर में औद्योगिक इकाइयां बंद होने के कारण ब्रजघाट का पानी इतना साफ हो गया कि रेतीली जमीन नजर आने लगी। कानपुर की गंगा गंदगी के कारण काली दिखती थी जो अब स्वच्छ होने पर पीली नजर आने लगी। लॉकडाउन के दौरान पानी साफ करने का खर्चा भी लगभग आधा हो गया था। प्रयागराज और वाराणसी के घाटों पर शवदाह में 85 से 90 प्रतिशत की कमी आई, जिससे गंगा साफ हुई। पानी साफ होने के कारण काशी घाटी की सीढ़ियों पर मछलियों के झुंड अठखेलियां करते नजर आने लगे जो प्रकृति का अद्भुत नजारा देखने को मिला। इन घाटों पर पहले रोजाना औसतन 100 के लगभग शव जलाए जाते थे जो इस काल में केवल 5 – 7 तक ही सीमित रहे। पटना में गंगा घाट पर भी मछलियां अठखेलियां करने लगी। नालों में गंदगी गिरनी बंद हो गई। पानी स्वच्छ हो चला, जिससे वहां पर डाला जाने वाला सिक्का भी साफ नजर आने लगा था।

वरिष्ठ पर्यावरण कार्यकर्ता विश्वजीत रॉय के अनुसार लॉकडाउन की वजह से हुगली नदी के पानी में प्रदूषण में कमी हुई है। 'गंगा डॉल्फिन' दुनिया में ऐसी डॉल्फिन है जो स्वच्छ और मीठे पानी में पाई जाती है। इस दौरान देखने का मिली। जल और वायु प्रदूषण के कारण कई जीव–जन्तु विलुप्त होते जा रहे हैं। कोलकता – हुगली नदी में हावड़ा ब्रिज के दोनों तरफ फेरियों का आवागमन बंद होने के कारण करीब 30 साल बाद हुंगली में डॉल्फिन खेलती नजर आई। ऐसे ही अनेकों जलीय जीव जंतुओं को फलने–फूलने का सुअवसर मिला और उनकी संख्या में बढ़ोतरी हुई।

[2] Nephelometric Turbidity Unit

प्रेरणा कहीं से भी मिलें, सराहना करना इस दिशा में पहला काम है, इसलिए जो संवर चुकी है, उस कुदरत को संवरा ही रहने दिया जाए तो ही मानव व जीव जगत का कल्याण होगा।

संदर्भ सूची

1. भूगोल और आप, अंक 8, संख्या 4, जुलाई अगस्त, 2009
2. दैनिक भास्कर
3. दिवाकर अशोक, मानव भूगोल, 2019, जे.वी.डी. प्रा. लि0, करनाल
4. https://khabar.ndtv.com
5. https://www.amarujala.com
6. नवभारत टाईम्स. इण्डिया टाईमस.कॉम
7. विकिपीड़िया
8. www.jagran.com
9. www.patrika.com
10. Zee news हिन्दी डेस्क